पुत्र की म त्यु का कारण सर्प नहीं है, अतः उसे न मारो। सर्प मनुष्य की बोली में बोलता है कि वह उसकी म त्यु का कारण नहीं है। कर्मानुसार जीव के फल होते हैं। म त्यु भी प्रकट होकर कहता है कि मैं भी इसकी म त्यु का कारण नहीं हूँ। काल के द्वारा नियंत्रित कर्म का ही मैंने पालन किया है। इस पर काल वहाँ प्रकट हुआ और बोला कि अपनी म त्यु का कारण स्वयं यह बालक ही है और वह कर्मानुसार ही म त्यु को प्राप्त हुआ है। इस पर बहेलिया संतुष्ट हो गया और उसने सर्प को छोड़ दिया।

(२१) सियार तथा बंदर का संवाद– युधिष्ठिर द्वारा यह पूछे जाने पर कि जो व्यक्ति ब्राह्मणों को वचन देकर भी उसे दान नहीं देता उसे कौन-सा फल प्राप्त होता है? इस पर भीष्म ने सियार और बंदर-संवाद को द टांत रूप में प्रस्तुत कर कहा कि ऐसे व्यक्ति को आशाएँ निष्फल हो जाती हैं। यह लघुनीति कथा है, पर इसपर सम्प्रदाय विशेष का प्रभाव परिलक्षित होता है।

(२२) श्येनकपोताख्यान– भीष्म ने युधिष्ठिर को उपदेश देते हुए कहा कि शरण में आये हुए व्यक्ति की रक्षा करनी चाहिए। इस कथा में श्येन कपोत पर हमला करता है और कपोत राजा की शरण में चला जाता है श्येन राजा के पास आकर कहता है कि यह मेरा भक्ष्य है, अतः आप इसे मुझे दे दीजिये। राजा उसे कपोत के बदले अन्य जानवरों को देने का वचन देता है और शरणागत कपोत की रक्षा करता है। इस पर श्येन कहता कि यदि कबूतर आपको इतना प्रिय है तो आप अपना मांस निकाल कर दे दें। राजा अपना वचन पूरा करने के लिए तराजू पर चढ़ जाता है और देवता प्रसन्न होकर उसे दिव्य विमान से स्वर्ग में ले जाते हैं।

(२३) कीटाकोपख्यान– यह आख्यान व्यास और एक कीड़े का है। इसमें कीड़ा व्यास जी के उपदेश को ग्रहण कर विभिन्न योनियों में भ्रमण करता हुआ ब्रह्मत्व को प्राप्त करता है, यही इस कहानी का विषय है। इस कथा में उपदेश निहित है कि महात्मा की शिक्षा ग्रहण कर साधारण व्यक्ति भी उन्नति कर सकता है।

(२४) नकुलाख्यान– यह कथा आश्वमेधिक पर्व में है (१४/९०)। जनमेय ने वैशम्पायन से पूछा कि आप मेरे पितामह धर्मराज की किसी अद्भुत घटना का वर्णन करें। इस पर जनमेजय ने उस नेवले की कहानी सुनायी जिसने यज्ञ की समाप्ति के पश्चात् युधिष्ठिर के समक्ष उपस्थित होकर उनके यज्ञ की निन्दा करते हुए कपोति-ब्राह्मण की कथा कही थी। किस प्रकार के क्षुधाकुल ब्राह्मण परिवार के निकट एक अतिथि आया और ब्राह्मण ने अपना भोजन उसे देकर उसकी क्षुधा शान्त की। ब्राह्मण के प्रसन्न होने पर कपोति सपरिवार स्वर्ग चला गया। इस कहानी में यह उपदेश दिया गया है कि सच्चे भाव से दिया गया अल्प दान भी बड़े दान से बढ़ कर है।

महाभारत के सभी आख्यान मूल कथा से इस प्रकार गुंफित हैं कि वे ऊपर से जोड़े गए नहीं लगते और प्रधान कथा के विकास में सहायक सिद्ध होते हैं। इसमें कहानी में कहानी सुनाने की विधि की योजना की गयी है। सभी कथाएँ या तो राजधर्म अथवा नीतिधर्म की शिक्षा देने के लिए द ष्टान्त रूप में प्रस्तुत की गई हैं या इनके (कथाओं के) माध्यम से ब्राह्मणों का गौरव बढ़ाया गया है।

अनुवर्ती साहित्य–

अपनी असामान्य विशेषताओं और अपने गुण-बाहुल्य के कारण 'महाभारत' की 'पंचम वेद' के रूप मे याद किया जाता है। महासागरस्वरूप इस 'महाभारत' के गर्भ से ही 'गीता', 'विष्णुसहस्त्रनाम' 'अनुगीता', भीष्मस्तवराज' और 'गजेन्द्रमोक्ष' नामक 'प चरत्नों' की स ष्टि हुई है। 'भगवद्गीता' जैसी अद्वितीय जगद्व्यापी ख्याति की महाकृति का उद्गम होने के कारण 'महाभारत' का महत्त्व और भी बढ़ जाता है।

'महाभारत' संस्कृत-साहित्य के अनेक काव्यों, महाकाव्यों, नाटकों और कथाकृतियों का जन्मदाता है। उसमें कति-बुद्धि को प्रेरणा देने वाले तत्त्व प्रचुर मात्रा में विद्यमान हैं। इसी द ष्टि से पाश्चात्त्य

पण्डितों ने उसको 'एपिक विदिन एपिक' (महाकाव्य के भीतर महाकाव्य) कहकर सम्बोधित किया है। यदि संस्कृत के उन ग्रंथों को अलग किया जाए, जो 'महाभारत' अपने मूल रूप में उत्तरवर्ती संस्कृत-साहित्य का एक ऐसा ग्रन्थराट् है, जिसके छोटे-छोटे हिस्से कालिदास, भारवि, भवभूति, बाण, प्रभ ति ग्रन्थकारों की कृतियों में देखने को मिल सकते हैं।

आध्यात्मिक, राजनीतिक, साहित्यिक, सामाजिक, धार्मिक और ऐतिहासिक सभी विषयों के बीज 'महाभारत' में बिखरे हैं। यही कारण है कि कृष्णद्वैपायन वेदव्यास ने गौरव के साथ 'महाभारत' की महत्ता को इन शब्दों मे व्यक्त किया है कि 'इस ग्रन्थ में जो कुछ है वह अन्यत्र भी है किन्तु जो कुछ इसमें नहीं है वह कभी कहीं भी नहीं है।' 'महाभारत' की श्रेष्ठता का एक प्रसंग दूसरा है, जिसका आशय है कि जैसे दही में नवनीत, मनुष्यों में ब्राह्मण, वैदिक साहित्य में आरण्यक, औषधियों में अम त, जलाशयों में समुद्र और चतुष्पादों में गौ श्रेष्ठ हैं, उसी प्रकार समस्त इतिहासों में यह 'भारत' श्रेष्ठ है।

संस्कृत का काव्य, महाकाव्य, नाटक और चंपू प्रभ ति अनेक विषयों की कृतियों को 'महाभारत' के कथानक ने प्रभावित किया है। लगभग भास से लेकर तेरहवीं शताब्दी में वर्तमान अगस्त्य कवि की कृतियों तक सर्वत्र 'महाभारत' का दाय लिया गया है। इस प्रकार के ग्रन्थकारों की कृतियों के नाम यहाँ प्रस्तुत हैंः

भास	पंचरात्र	क्षेमीश्र्वर	नैषधानन्द
"	दूतवाक्य	त्रिविक्रमभट्ट	नलचंपू
"	मध्यम व्यायोग	क्षेमेन्द्र	भारतमंजरी
"	दुतघटोत्कच	कांचन पण्डित	धनंजयव्यायोग
भास	कर्णधार	वत्सराज	किरातार्जुनीय-
"	ऊरुभंग		व्यायोग
कालिदास	अभिज्ञानशाकुन्तल	श्री हर्ष	नैषधचरित
भारवि	किरातार्जुनीय	रामचंद्र	नलविलास,
भट्ट नारायण	वेणीसंहार	"	निर्भयभीम
माघ	शिशुपालवध	अमरचंद	बालभारत
कुलशेखर वर्मन्	सुभद्रा-धनंजय	देवप्रभ सूरि	पांडवचरित
नीतिवर्मन्	कीचकवध	कृष्णानन्द	सहृदयानन्द
राजशेखर	बालभारत	अगस्त्य	बालभारत

महाभारत का सांस्कृतिक महत्त्व -

भारतीय परम्परा में महाभारत को एक सांस्कृतिक महाकाव्य ओर धर्मशास्त्र के साथ साथ उसे एक पवित्र ग्रन्थ भी माना जाता है। लगभग दो हजार वर्षों से महाभारत वर्तमान शतसाहस्त्री संहिता के रूप में प्रसिद्ध एवं प्रचलित है। पाँचवी शताब्दी के दानपत्रों में महाभारत की इस प्रतिष्ठा के प्रमाण मिलते हैं। ईसा की पहली शताब्दी मे मध्य में दक्षिण आने वाले डायोनक्राईसोस्टोम नामक यात्री ने लिखा है कि उस समय में एक लाख श्लोकों का महाभारत (जिसे उसने भारत का इलियड कहा है) प्रसिद्ध एवं प्रचलित था। इसके अनेक प्रमाण मिलते हैं कि महाभारत की कथा मन्दिरों में गाई जाती थी और जनसमूह उसे श्रद्धा से सुनता था। भारतवर्ष में ही नहीं वरन् पूर्व एशिया के उन देशों में भी महाभारत का प्रचार था, जिनमें भारतीय संस्कृति का विस्तार हुआ था। ईसा की पूर्व शताब्दियों में भी महाभारत के नाम का उल्लेख मिलता है। किन्तु आधुनिक विद्वान् इसे महाभारत